BA Part III (H)
Paper V

Dr. Chirranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Raj Nagar

Lecture IV

गोत्र - (विशेषताएं) ⇒

3. एकपक्षीय प्रकृति ⇒ गोत्र एकपक्षीय सम्बन्ध है इसमें पिता या माता के समूह वंशावली की श्रृंखला को देखा जाता है। जो पितृ प्रधान जातियां है तो पिता के वंशावली समूह अर्थात पिता - पितामह या उनके ऊपर के वंश को देखा जाता है, माता का नहीं। उसी प्रकार मातृ प्रधान जातियों में माता के वंशावली समूह अर्थात माता की माता या उसके आगे माता की माता के वंश को देखा जाता है, पिता का नहीं। दो वंशावलियों में से किसी एक को चुनकर उस वंशावली वाली को अपना खोज करना ही गोत्र कहलाता है।

2020-8-13 09:23

4. गोत्र के रूप - गोत्र की सदस्यता प्रकृति के आधार पर इसके दो रूप a) पितृवंशीय तथा b) मातृवंशीय। पितृवंशीय गोत्र में एक पुरुष, उसके बच्चे, पुरुष के भाई और उनके बच्चे सम्मिलित होते हैं, परन्तु बहनों के नहीं। मातृवंशीय गोत्र में एक स्त्री, उसके बच्चे, स्त्री की बहनें और उनके बच्चे सम्मिलित होते हैं भाइयों के नहीं।

5. गोत्र के नाम => गोत्र को नाम से जाना जाता है। हिन्दुओं में गोत्रों के नाम ऋषियों के नाम पर आधारित है जैसे शाण्डिल्य, भारद्वाज, गौतम, कश्यप व वत्स आदि। जनजातियों में गोत्र के नाम टोटम (कुन्जम व नागसोरी आदि) एवं स्थान (जौनपुरिया, महानदिया व सरगुजिया आदि) के आधार पर होता है।

6. टोटम व एक लैंगिक निषेध - रिवर्स गोत्र की विशेषताओं में टोटम व एक लैंगिक निषेध को भी सम्मिलित करते हैं। उनका कहना है कि प्रत्येक गोत्र का कोई न कोई टोटम अवश्य होता है।

2020-8-13 09:23